SPECially for RaJ.

ANCIENT HISTORY SOURCE — राज॰ के अभिलेख

राजा महाराजाओं द्वारा अपने राजवंश तथा स्वंय के बारे में पत्थरों पर लिखवाया जाता है. जिन्हें "शिलालेख या अभिलेख" कहा जाता है.

(1). बड़ली अभिलेख, अजमेर :-

- राज॰ का प्राचीनतम अभिलेख (443 ई॰पू॰)
- 1912 ई॰ गौरीशंकर हीराचंद ओझा को "भिलोट माता मंदिर" से प्राप्त हुआ था
- यह अभिलेख वीर निर्वाण संवत 84 का है.
  ↓
  महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद जैनीयों ने प्रा॰ किया था.
- यह माध्यमिका को जैन केंद्र होने की जानकारी देता है.

(भारत का प्राचीनतम ↓ पिपरावा (U.P) (487 ई॰पू॰))

(2). वसंतगढ़ अभिलेख, सिरोही :-

- क्षेमकारी (खिमेल) माता मंदिर से प्राप्त
- यह "वर्मलात" के समय का अभिलेख है.
- इसमें इसके सामंत राज्जिल व उसके पिता वज्रभटट का वर्णन है.
- वर्मलात चावड़ा वंश का शासक था-

(3). बुचकला अभिलेख, जोधपुर :-

- यह नागभटट-II, के समय का है.
- यह अभिलेख बिलाड़ा के पार्वती मंदिर से प्राप्त हुआ
- प्राप्तकर्ता → ब्रह्म भटट नानूराम
- गुर्जर प्रतिहार की जानकारी देता है.

Scanned with CamScanner

(4). बिजौलिया अभिलेख, भिलवाड़ा :-

- यह अभिलेख "पार्श्वनाथ मंदिर" से प्राप्त हुआ था-
- यह 1170 ई. का "सोमेश्वर-चौहान" के काल का है.
- इसके अनुसार पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण - लोलाक जैन व वास्तुकार "माहणक" को बताया है.
- इसके अनुसार -चौहान "वत्सगौत्रीय ब्राह्मण" कहा गया है
- इसके अनुसार -चौहान राजा वासुदेव चौहान ने "सांभर झील" का निर्माण करवाया था तथा नागौर को अपनी राजधानी बताया (551ई
- इसके अनुसार "विग्रहराज IV" ने दिल्ली को जीत लिया था
- भूमि अनुदान की जानकारी मिलती है.
  ↳ डोहली
- रचनाकार → गुणभद्र लेखक - केशव उत्कीर्णक → गोविंद
- प्राचीन नगरों की जानकारी प्राप्त होती है.

जालौर - जबालीपुर
शाकम्भरी - सांभर
दिल्लिका - दिल्ली
भीनमाल - श्रीमाल
माडलकर - माण्डलगढ़
नड्डुल - नाडोल.

बिजौलिया - विंध्यवली
नागहृद - नागदा
उत्माद्री - ऊपरमाल
अहिच्छत्रपुर - नागौर.

(5) घटियाला अभिलेख, जोधपुर :-

- ये अभिलेख प्रतिहार राजा "कुक्कुक" प्रतिहार के द्वारा स्थापित किए गए-
- इसमें कुल 5 अभिलेख है, जिसमें 4 अभिलेख संस्कृत भाषा में तथा 5वाँ प्राकृत भाषा मे है
- पांचवें अभिलेख में प्रथम 4 अभिलेखों का संक्षिप्त विवरण है.
- इस अभिलेख मे हरिश्चंद्र से कुक्कुक तक वंशावली का वर्णन है.
- लेखक → मातरवि उत्कीर्णक → कृष्णेश्वर

Scanned with CamScanner

6. बाउक प्रशस्ति :-

- यह अभिलेख मंडोर, जोधपुर मे विष्णु मंदिर में लगी हुई थी.
- इसे बाद में जोधपुर शहर के परकोटे में लगा दी थी
- इसे "मंडोर प्रशस्ति" भी कहते हैं
- इसे बाउक ने 837 ई० में लगवाई थी
- बाउक, कुक्कुक का भाई था
- इसमें शिव व विष्णु भगवान की पूजा की जानकारी मिलती है.

7. घोसुंडी अभिलेख, चित्तोड़ :-

यह दूसरी शताब्दी का अभिलेख है.
यह संस्कृत व लिपि ब्राह्मी है,
खोजकर्ता - श्यामल दास → पुस्तक "वीर विनोद" में जानकारी
इस अभिलेख में गज वंश के सर्वतात जो पाराशरी का पुत्र था उसकी जानकारी मिलती है
इसके अनुसार सर्वतात ने अश्वमेध यज्ञ करवाया था तथा इससे पहले संकर्षण व वासुदेव की पूजा करता है.
(संकर्षण - बलराम, वासुदेव - कृष्ण)
यह राज० में वैष्णव संप्रदाय से संबंधित प्राचीनतम अभिलेख है
इसे डॉ० डी० आर० भंडारकर द्वारा पढ़ा गया था.

8. चीरवा अभिलेख, उदयपुर :-

यह 1273 ई० का है, जो संस्कृत भाषा मे नागरी लिपि में लिखा है
इस अभिलेख में गुहील वंश के बापा रावल, पदम सिंह जैत्र सिंह, तेज सिंह, समर सिंह की जानकारी
अत: समर सिंह के काल का अभिलेख है
इसमे जैत्र सिंह के भूताला के युद्ध की जानकारी
इसमे जैत्र सिंह को "प्रलय-मारुत" की उपाधि दी गई है.
इसमें चैत्रगच्छ के आचार्यों का वर्णन मिलता है
यह सती प्रथा की जानकारी देता है.
रचियता - रत्नप्रभ सूरि, लेखक - पार्श्वचन्द्र उत्कीर्णक - केलि सिंह
शिल्पी - देल्हण.

Scanned with CamScanner

9. सामोली अभिलेख, उदयपुर :-

- 646 ई॰ सामोली, उदयपुर.

- यह गुहिल राजा शिलादित्य के समय का अभिलेख है. जो संस्कृत भाषा में लिखित है.

- इस अभिलेख द्वारा ही गुहिल वंश के समय का निर्धारण होता है.

- इस अभिलेख के अनुसार वटनगर [बसन्त गढ] के "जेतक" ने अरण्यवासी माता (आवर माता) का मंदिर बनवाया था-

- जेतक ने देव कुण्ड स्थान पर अग्नि मे प्रवेश कर लिया था

- इस अभिलेख के अनुसार आवर में तांबे व जस्ते के खनन उद्योग की जानकारी देता है.

10. श्रृंगि ऋषि शिलालेख, उदयपुर :-

- 1428 ई॰ - नागदा, उदयपुर मे प्राप्त - राणा मोकल के समय

- यह एकलिंग मंदिर के पास प्राप्त हुआ जो "संस्कृत भाषा" में लिखित है.

- इस अभिलेख के अनुसार मोकल ने अपनी बाघेला रानी गौराम्बिका की मुक्ति के लिए यहां कुण्ड बनवाया था

- इस अभिलेख में हम्मीर से मोकल तक की जानकारी-

- इस अभिलेख के अनुसार -

- हम्मीर ने भीलवाड़ा, ईडर, पालनपुर को जीत लिया था

- क्षेत्र सिंह ने मालवा के "अमीशाह" को हराया था

- लक्ष सिंह ने काशी, प्रयाग तथा गया को कर मुक्त करवाया था

- मोकल ने नागौर के फिरोज खान तथा गुजरात के अहमद शाह को हरवाया था.

- मोकल ने एकलिंग महादेव मन्दिर में प्राचीर व चार दरवाज़ो का निर्माण करवाया

- मोकल ने 25 तुलादान किए थे जिनमे से एक पुष्कर के वराह मंदिर में किया था

- गुरु → त्रिलोचन व अन्य रानी मायावती की जानकारी

रचियता - वाणी विलास योगेश्वर उत्कीर्णक - "फना"

Scanned with CamScanner

11. भाब्रु अभिलेख/बैराठ कलकत्ता अभिलेख :-

प्राप्त → विराट नगर (बैराठ), जयपुर.

- यह अभिलेख 1837 ई. में "केप्टन बर्ट" को प्राप्त हुआ था जिसे इन्होने "भाब्रू शिविर" में रखा था

- 1840 ई. मे इसे कलकत्ता के संग्रहालय में रखवा दिया गया

- इस अभिलेख में अशोक को मगध का राजा कहा गया है

- अशोक को "प्रियदर्शी" नाम से संबोधित किया है.

- इस अभिलेख के अनुसार बुद्ध, संघ तथा धम्म में श्रद्धा

- इसमें 7 बौद्ध ग्रन्थों की जानकारी मिलती है.

- केप्टन किटोई ने इसका अनुवाद किया था

12. बैराठ अभिलेख :-

प्राप्त :- बैराठ में भीमसेन डूंगरी से

-1871-72 ई. में "श्री कलाईल" को प्राप्त हुआ था

यह अभिलेख सासाराम व रूपनाथ अभिलेखों

- इस अभिलेख के अनुसार उपासक बनने के बाद 25 वर्ष बाद तथा संघ में आने के 1 वर्ष बाद धम्म का प्रचार प्रसार किया

- इसका संपादन बूहलर एवं सेनार्ट ने किया-

13. कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति :-

- महाराणा कुम्भा द्वारा लिखवाई गई

समय - 3 दिस. 1460 (विक्रम संवत 1517).

प्रशस्तिकार - अत्रि भट्ट व महेश भट्ट.

यह प्रशस्ति लगभग 8 शिलाओं पर लिखी गई थी परन्तु वर्तमान में हमे केवल 2 शिलालेख मिलते हैं.

इस प्रशस्ति में बापा रावल से कुम्भा तक की जानकारी

इस प्रशस्ति के अनुसार

विजय अभियान → मंडोर, सपादलक्ष, नराणा, बसंतपुर आबु, खंडेला, जांगलदेश, नागौर, गुजरात, मालवा

मालवा व गुजरात की संयुक्त सेना को हराया

कुम्भा द्वारा रचित ग्रंथ - संगीत राज, चंडी शतक, सुधा प्रबंधन गीत गोविंद की टीका, तथा 4 नाटक.

Scanned with CamScanner

कुंभा की उपाधियों की जानकारी
राजगुरु, दानगुरु, शैलगुरु, अभिनवभरताचार्य

14. राज प्रशस्ति, राजसमंद :-

स्थित - राजसमंद समय - राज सिंह द्वारा 1676 ई० में
रचनाकार - श्री रणछोड़ भट्ट
- यह भारत का सबसे बड़ा शिलालेख है
- इसे 25 शिलालेखों में उत्कीर्ण करवाया गया था.
- प्रथम शिलालेख में माँ दुर्गा, गणपति गणेश, सूर्य आदि देवी - देवताओं की स्तुति है
- इस प्रशस्ति में कुल 1106 श्लोक है.
- इस प्रशस्ति के अनुसार
  - राज सिंह द्वारा राज समंद झील का निर्माण
  - राणा रत्न सिंह एवं अलाउद्दीन खिलजी के युद्ध का वर्णन
  - हल्दी घाटी युद्ध की जानकारी
  - गोमती नदी को बांध कर राजसमंद झील का निर्माण
  - औरंगजेब व राज सिंह के मध्य संबंध की जानकारी

15. कुम्भलगढ़ प्रशस्ति :-

स्थान - कुम्भलगढ़ दुर्ग, राजसमंद
समय → महाराणा कुम्भा द्वारा 1460 ई० में
- संस्कृत भाषा में 5 शिलालेखों में उत्कीर्ण
रचनाकार - कान्हा व्यास [परन्तु गौरी शंकर हीराचंद ओझा के अनुसार "महेश भट्ट" है].
- इस प्रशस्ति मे हम्मीर को "विषम घाटी पंचानन" की उपाधि दी गई है.

Scanned with CamScanner